

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ षट्षष्टितमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बुणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ षट्षष्टितमः सर्गः ॥

कुम्भकर्णभयां पलायमानानां रानराणामङ्गदेन प्रोत्साहनमाराहनं  
च कुम्भकर्णेन कपीनां संहारः पुनर्नरसैनिकानां  
पलायनमङ्गदेन प्रबोध्य तेषां पुनः प्रत्यारतनं च

स लङ्घयित्वा प्राकारं गिरिकुटोपमो महान्।  
निर्ययौ नगरां तूर्णं कुम्भकर्णो महाबलः ॥ 6.66.1 ॥

ननाद च महानादं समुद्रमभिनादयन्।  
रिजयन्निर निर्घातान् रिधमन्निर परतान् ॥ 6.66.2 ॥

तमरध्यं मघरता यमेन ररुणेन रा।  
प्रेक्ष्य डीमाङ्गमायाङ्गं रानरा रिप्रदुङ्गबुः ॥ 6.66.3 ॥

ताङ्गु रिप्रद्रतान् दृष्ट्वा राजपुत्रोहङ्गदोहब्रवीत्।  
नलं नीलं गराङ्गं च कुमुदं च महाबलम् ॥ 6.66.4 ॥

आङ्गनङ्गानि रिङ्गुत्य रीर्याङ्ग्यभिङ्गनानि च।  
रु गङ्गत डयङ्गङ्गाः प्राङ्गुता हरयो यथा ॥ 6.66.5 ॥

साधु सौम्या निरर्तङ्गं किङ्ग प्राणान् परिङ्गथ।  
नालं युङ्गाय रै रङ्गङ्गा महतीङ्गं रिङ्गीषिका ॥ 6.66.6 ॥

महतीङ्गुङ्गितामेनाङ्गं राङ्गसानाङ्गं रिङ्गीषिकाम्।  
रिङ्गमाद् रिङ्गमिष्यामो निरर्तङ्गं ळरङ्गमाः ॥ 6.66.7 ॥

কৃচ্ছ্ৰেণ তু সমাশ্ৰস্য সঙ্গম্য চ ততস্ততঃ।  
বৃক্ষান্ গৃহীৎরা হরযঃ সম্প্রতস্থু রণাজিরে ॥ 6.66.8 ॥

তে নিরর্ত্য তু সংরন্ধাঃ কুম্ভকর্ণং রনৌকসঃ।  
নিজঘ্নুঃ পরমক্রুদ্ধাঃ সমদা ইর কুঞ্জরাঃ ॥ 6.66.9 ॥

প্রাংশুভির্গিরিশৃঙ্গৈশ্চ শিলাভিশ্চ মহাবলাঃ।  
পাদপৈঃ পুষ্পিতাগ্রৈশ্চ হন্যমানো ন কম্পতে ॥ 6.66.10 ॥

তস্য গাত্রেষু পতিতা ভিদ্যন্তে বহরঃ শিলাঃ।  
পাদপাঃ পুষ্পিতাগ্রাশ্চ ভগ্নাঃ পেতুমহীতলে ॥ 6.66.11 ॥

সোহপি সৈন্যানি সঙ্কুদ্ধো রানরাণাং মহৌজসাম্।  
মমন্স্থ পরমাযত্তো রনান্যগ্নিরিরোথিতঃ ॥ 6.66.12 ॥

লোহিতাদাস্তু বহরঃ শেরতে রানরর্ষভাঃ।  
নিরস্তাঃ পতিতা ভূমৌ তাম্রপুষ্পা ইর দ্রুমাঃ ॥ 6.66.13 ॥

লঙ্ঘযন্তঃ প্রধারন্তো রানরা নারলোকযন্।  
কেচিৎ সমুদ্রে পতিতাঃ কেচিদ্ গগনমাস্থিতাঃ ॥ 6.66.14 ॥

রধ্যমানাস্তু তে রীরা রাক্ষসেন চ লীলযা।  
সাগরং যেন তে তীর্ণাঃ পথা তেনৈর দুদ্রবুঃ ॥ 6.66.15 ॥

তে স্থলানি তদা নিম্নং রিরর্ণরদনা ভযাৎ।  
ঋক্ষা বৃক্ষান্ সমারুঢাঃ কেচিৎ পর্তমাপ্রিতাঃ ॥ 6.66.16 ॥

মমজ্জুরর্ণরে কেচিদ্ গুহাঃ কেচিৎ সমাপ্রিতাঃ।  
নিপেতুঃ কেচিদপরে কেচিন্নৈরারতস্থিরে।  
কেচিদ্ ভূমৌ নিপতিতাঃ কেচিৎ সুপ্তা মৃতা ইর ॥ 6.66.17 ॥

তান্ সমীক্ষ্যাঙ্গদো ভগ্নান্ রানরানিদমব্রবীৎ।  
অরতিষ্ঠত যুধ্যামো নিরর্তধ্বং প্লরঙ্গমাঃ ॥ 6.66.18 ॥

ভগ্নানাং রো ন পশ্যামি পরিক্রম্য মহীমিমাম্।  
স্থানং সর্বে নিরর্তধ্বং কিং প্রাণান্ পরিরক্ষথ ॥ 6.66.19 ॥

নিরায়ুধানাং ক্রমতামসঙ্গগতিপৌরুষাঃ।  
দারা হ্র্যপহসিষ্যন্তি স রৈ ঘাতঃ সুজীরতাম্ ॥ 6.66.20 ॥

কুলেষু জাতাঃ সর্বেহস্মিন্ রিস্তীর্ণেষু মহৎসু চ।  
ক্ৰ গচ্ছত ভযত্রস্তাঃ প্রাকৃতা হরযো যথা।  
অনার্যাঃ খলু যদ্বীতাস্ত্যক্ৰা রীর্যং প্রধারত ॥ 6.66.21 ॥

রিকখনানি রো যানি ভরদ্বিজর্জনসংসদি।  
তানি রঃ ক্ৰ নু যাতানি সোদগ্রাণি হিতানি চ ॥ 6.66.22 ॥

ভীরোঃ প্রদাদাঃ শ্রযন্তে যস্ত জীরতি ধিক্কৃতঃ।  
মার্গঃ সৎপুরুষৈর্জুষ্টঃ সের্যতাং ত্যজ্যতাং ভযম্ ॥ 6.66.23 ॥

শযামহে রা নিহতাঃ পৃথির্যামল্লজীরিতাঃ।  
প্রাপ্নুযামো ব্রহ্মলোকং দুশ্প্রাপং চ কুযোধিভিঃ ॥ 6.66.24 ॥

অরাপ্নুযামঃ কীর্তিং রা নিহৎরা শক্রমাহরে।  
নিহতা রীরলোকস্য ভোক্ষ্যামো রসু রানরাঃ ॥ 6.66.25 ॥

ন কুম্ভকর্ণঃ কাকুৎস্থং দৃষ্টরা জীরন্ গমিষ্যতি।  
দীপ্যমানমিরাসাদ্য পতঙ্গো জ্বরলনং যথা ॥ 6.66.26 ॥

পলাযনেন চোদ্দিষ্টাঃ প্রাণান্ রক্ষামহে রযম্।  
একেন বহরো ভগ্না যশো নাশং গমিষ্যতি ॥ 6.66.27 ॥

এরং ব্রহ্মাণং তং শুরমঙ্গদং কনকাস্দদম্।  
 দ্রমাণাস্ততো রাক্যমুচুঃ শুররিগর্হিতম্ ॥ 6.66.28 ॥

কৃতং নঃ কদনং ঘোরং কুম্ভকর্ণেন রক্ষসা।  
 ন স্থানকালো গচ্ছামো দযিতং জীরিতং হি নঃ ॥ 6.66.29 ॥

এতারদুক্কা রচনং সর্বে তে ভেজিরে দিশঃ।  
 ভীমং ভীমাঙ্কমাযান্তং দৃষ্টরা রানরযুথপাঃ ॥ 6.66.30 ॥

দ্রমাণাস্ত তে বীরী অঙ্গদেন বলীমুখাঃ।  
 সান্ধ্বনৈশ্চানুমানৈশ্চ ততঃ সর্বে নিরর্তিতাঃ ॥ 6.66.31 ॥

প্রহর্ষমুপনীতাশ্চ রালিপুত্রেন ধীমতা।  
 আজ্ঞাপ্রতীক্ষাস্তসুশ্চ সর্বে রানরযুথপাঃ ॥ 6.66.32 ॥

ঋষভশরভমৈন্দধুম্রনীলাঃ।

কুমুদসুষেণগরাঙ্করম্ভতারাঃ।

দ্বিরিদপনসরায়ুপুত্রমুখ্যা -

স্কুরিততরাভিমুখং রণং প্রযাতাঃ ॥ 6.66.33 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে রাল্মীকীষে আদিকার্যে যুদ্ধকাণ্ডে ষট্‌ষষ্ঠিতমঃ সর্গঃ ॥